॥ श्रीहरिः ॥

श्वेताश्वतरोपनिषद्

सानुवाद शांकरभाष्यसहित

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१. शान्तिपाठ	११
प्रथम अध्याय	
२. सम्बन्धभाष्य	१२
३. जगत्-कारण ब्रह्मके स्वरूपके विषयमें ब्रह्मवादी ऋषियोंका विचार	६६
४. काल, स्वभाव आदिकी जगत्-कारणताका खण्डन	६९
५. ध्यानके द्वारा ऋषियोंको कारणभूता ब्रह्मशक्तिका साक्षात्कार	७२
६. कारण-ब्रह्मका चक्ररूपसे वर्णन	८३
७. कार्यब्रह्मका नदीरूपसे वर्णन	९१
८. जीवके संसार-बन्धन और मोक्षके कारणका निर्देश	९३
९. परब्रह्मकी प्राप्तिसे मुक्तिका वर्णन	९६
१०. व्यावहारिक भेद और ज्ञानद्वारा मोक्षका प्रदर्शन	१०१
११. ईश्वर, जीव और प्रकृतिकी विलक्षणता तथा उनके तत्त्व-ज्ञानसे मोक्षका कथन	१०७
१२. प्रधान और परमेश्वरकी विलक्षणता तथा उनके तत्त्व-ज्ञानसे मोक्षका कथन	११२
१३. ब्रह्मके ज्ञान और ध्यानजन्य फलोंमें भेद	११४
१४. ब्रह्मकी ज्ञातव्यता	१२०
१५. प्रणवचिन्तनसे ब्रह्म-साक्षात्कारका दृष्टान्तोंद्वारा समर्थन	१२२
द्वितीय अध्याय	
१६. ध्यानकी सिद्धिके लिये सवितासे अनुज्ञा-प्रार्थना	१२८
१७. सविताकी अनुज्ञाके बिना हानि	१३४
१८. सविताकी अनुज्ञासे लाभ	१३७
१९. ध्यानयोगकी विधि और उसका महत्त्व	१३८

विषय **पृष्ठ-संख्या**

२०. प्राणायामका क्रम और उसकी महत्ता १३९
२१. ध्यानके लिये उपयुक्त स्थानोंका निर्देश १४५
२२. योगसिद्धिके पूर्वलक्षण १४६
२३. रोग, जरा और अकालमृत्युपर विजय पानेके चिह्न १४७
२४. योगसिद्धि या तत्त्वज्ञानका प्रभाव १४८
२५. योगसिद्धि या तत्त्वज्ञकी स्थिति १४९
२६. परमात्मस्वरूपका वर्णन १५०

तृतीय अध्याय

२७. एक ही परमात्मामें शासक और शासनीय भावका समर्थन १५३
२८. परमेश्वरसे जगत्‌की सृष्टिका प्रतिपादन १५६
२९. परमेश्वरका स्तवन १५७
३०. परमात्मतत्त्वके ज्ञानसे अमृतत्वकी प्राप्ति १६०
३१. परमेश्वरके विषयमें ज्ञानीजनोंके अनुभवका प्रदर्शन १६१
३२. परमेश्वरके सर्वात्मभाव या विराट्-स्वरूपका वर्णन १६६
३३. आत्माके देहावस्थान और इन्द्रिय-सम्बन्धराहित्यका निरूपण १६८
३४. ब्रह्मका निर्विशेष रूप १७०
३५. आत्मज्ञानसे शोकनिवृत्तिका निरूपण १७२
३६. आत्मस्वरूपके विषयमें ब्रह्मवेत्ताका अनुभव १७३

चतुर्थ अध्याय

३७. परमेश्वरसे सद्बुद्धिके लिये प्रार्थना १७५
३८. परमात्माकी सर्वरूपता १७६
३९. प्रकृति और जीवके सम्बन्धका विचार १७८
४०. जीव और ईश्वरकी विलक्षणता १७९
४१. ब्रह्मकी अधिष्ठानरूपता और उसके ज्ञानसे कृतार्थता १८२
४२. मायोपाधिक ईश्वर ही सबका स्रष्टा है १८३
४३. प्रकृति और परमेश्वरका स्वरूप तथा उनकी सर्वव्यापकता........ १८४
४४. कारण-ब्रह्मके साक्षात्कारसे परम शान्तिकी प्राप्ति १८५
४५. अखण्डज्ञानकी सिद्धिके लिये परमात्माकी प्रार्थना १८८
४६. परमात्मज्ञानसे शान्तिप्राप्ति एवं बन्धननाशका पुनः उपदेश १९०
४७. परमात्मसाक्षात्कारके साधन १९३

विषय — पृष्ठ-संख्या

४८. ज्ञानसे द्वैत-निवृत्तिका उपदेश १९५
४९. ब्रह्मके अनुपम एवं इन्द्रियातीत स्वरूपका वर्णन १९७
५०. परमेश्वरका स्तवन १९९

पंचम अध्याय

५१. अक्षराश्रित विद्या-अविद्या और उनके शासक परमेश्वरके स्वरूप तथा माहात्म्यका वर्णन..... २०२
५२. कर्तृत्वादि धर्मोंसे युक्त जीवात्माके स्वरूपका वर्णन २०९
५३. जीवको कर्मोंके अनुसार विविध देहकी प्राप्तिका निर्देश २१३
५४. परमात्मतत्त्वके जाननेसे जीवकी मुक्तिका कथन २१५

षष्ठ अध्याय

५५. परमेश्वरकी महिमासे सृष्टिचक्रका संचालन २१८
५६. चिन्तनीय परमेश्वरका स्वरूप तथा उसकी महिमा २१९
५७. भगवदर्पणकर्मसे भगवत्प्राप्ति २२१
५८. उपासनासे भगवत्प्राप्ति २२३
५९. ज्ञानसे भगवत्प्राप्ति २२५
६०. ज्ञानियोंके तत्त्वानुभवका उल्लेख २२६
६१. परमेश्वरकी महत्ता २२७
६२. ब्रह्मसायुज्यके लिये परमेश्वरसे प्रार्थना २२९
६३. परमेश्वरके स्वरूपका निर्देश २२९
६४. परमात्मज्ञानसे नित्यसुखकी प्राप्ति और मोक्ष २३१
६५. ब्रह्मके प्रकाशसे ही सबको प्रकाशकी प्राप्ति २३३
६६. मोक्षके लिये ज्ञानके सिवा अन्य हेतुओंका निषेध २३५
६७. परमेश्वरके स्वरूपका विशेषरूपसे वर्णन २३६
६८. मुमुक्षुके लिये भगवच्छरणागतिका उपदेश २३८
६९. परमात्मज्ञानके बिना दुःख-निवृत्तिकी असम्भावना २४१
७०. श्वेताश्वतर-विद्याका सम्प्रदाय तथा इसके अधिकारी २४३
७१. अनधिकारीके प्रति विद्योपदेशका निषेध २४६
७२. परमेश्वर और गुरुमें श्रद्धा-भक्ति रखनेवाले शिष्यके प्रति किये गये उपदेशकी सफलता २४८